

रामायण मे महिला पात्र और आधुनिक समाज में उनकी प्रासंगिकता

Enakshi Das¹

¹Assistant professor, Department of Sanskrit, Acharya Sukumar Sen Mahavidyalaya, P.O. Gotan, Dist. Purba, Via: Tarakeswar, Bardhaman, 712410, India.

अमूर्त ABSTRACT

शोध प्रबंध रामायण के दो प्रमुख नारीवादी समायोजनों पर केंद्रित है, सारा जोसेफ की रामायण कहानियाँ और वोल्गा की द लिबरेशन ऑफ सीता। दोनों लघु कहानी संग्रह महाकाव्य कथा को विकृत करते हुए विशिष्ट महिलाओं की आवाज़ को प्रदर्शित करने के लिए एक मंच प्रस्तुत करते हैं। परियोजना उन विभिन्न तरीकों की जांच करती है जिनमें जाति की राजनीति, शारीरिक सौंदर्यशास्त्र, शुद्धता और निष्ठा की धारणाएँ, विकलांगता, नस्ल और वर्ग को सारा जोसेफ और वोल्गा द्वारा अलग-अलग तरीकों से व्यवहार किया जाता है ताकि महिलाओं के उत्पीड़न को अंतरविरोध के आधार पर स्पष्ट किया जा सके। प्रवचन विश्लेषण को विधि के रूप में लागू किया जाता है, और अनुसंधान नारीवादी सिद्धांत, संशोधनवादी पौराणिक प्राणियों, संवाद चेतना और अल्पसंख्यक प्रवचनों पर आधारित है। अध्याय अतिरिक्त रूप से उन तरीकों की ओर इशारा करते हैं जिनमें सारा जोसेफ इन आवाज़ों को जाति और व्यापक सामाजिक संरचनाओं जैसे हालिया मुद्दों से जोड़ती हैं। सबसे प्रसिद्ध भारतीय महाकाव्यों में से, रामायण और महाभारत ने हिंदू दर्शन और विचार को आकार दिया है। संस्कृत में "इतिहास" (ऐतिहासिक किताबें) दो महाकाव्यों का संदर्भ है, जो आंशिक रूप से वास्तविक जीवन की घटनाओं पर आधारित माना जाता है। विचारधारा, जिम्मेदारियों, रिश्तों और कर्म के आदर्शों का व्यापक विश्लेषण महाकाव्य कथा रामायण में पाया जा सकता है। जीवन के उद्देश्य पर विचार करने के अलावा, इसे कई हिंदुओं द्वारा पवित्र साहित्य के एक टुकड़े के रूप में मान्यता दी गई है क्योंकि यह अंतर्दृष्टि और आध्यात्मिक मूल्य प्रदान करता है। स्कॉटिश कवि, उपन्यासकार, और साहित्यिक आलोचक एंड्रयू लॉंग ने घोषणा की है कि "महाकाव्य केवल कविता नहीं हैं, बल्कि इतिहास भी हैं, इतिहास वास्तव में वास्तविक घटनाओं का नहीं है, बल्कि वास्तविक शिष्टाचार का, वास्तविक दुनिया का है, जो अन्यथा हमारे लिए अज्ञात है।" भले ही रामायण के सभी स्पष्टीकरणों में राम और सीता की कहानी एक ही है, लेकिन मेरे मूड और मेरे चश्मे के नुस्खे के अलावा ऐसा क्या है जो हर नए पढ़ने के साथ बदलता है? जब मैं आने वाले भौतिक फ्रेम और लेंस घटकों का जिक्र करता हूँ तो मेरा मतलब नारीवादी लेंस से होता है। जो महिलाओं के समान अवसर और अवसर तलाशने के विशेषाधिकार के लिए अभियान चलाता है, उसे नारीवादी के रूप में जाना जाता है। फिर भी, रामायण की प्रमुख महिला पात्रों, जैसे कैकेयी, सीता, तारा, शूर्पणखा, शान्ता, या मंदोदरी की समकालीन व्याख्याओं में 19वीं शताब्दी के मध्य के बाद की सीमाओं और संज्ञा सम्मिलन का अधिक से अधिक उपयोग किया जा रहा है। ये महिलाएँ किस तरह समकालीन नारीवाद का प्रतिनिधित्व करने वाले पुनर्जीवित प्रतीकों के रूप में काम करती हैं? क्या उनकी मानव सभ्यताओं को उनके पुरुष समकक्षों की तरह ही नारीवादी माना जा सकता है?

कीवर्ड (Keywords): साहसी, इतिहास, ऐतिहासिक, नारीवादी, रामायण, पौराणिक कथाएँ, अंतर्विरोध, मुक्ति, लघु कथा, भाईचारा।

1. परिचय INTRODUCTION

श्रीनिवासन अयंगर ने टिप्पणी की, "नैतिकता की (वाल्मीकि की रामायण से बेहतर) कोई पाठ्यपुस्तक नहीं हो सकती, जिसे युवाओं के हाथों में सुरक्षित रूप से देकर उन्हें आचरण और चरित्र के उच्च और महान आदर्शों के लिए प्रेरित किया जा सके।" यह व्याख्या इस धारणा से समर्थित है कि महाकाव्य की नायिका सीता, भारतीय नारीत्व की सबसे महान प्रतिभा हैं और मन, वचन और कर्म में अपने प्रभुत्व के लिए खुद को समर्पित करती हैं, जबकि नायक राम को आदर्श जीवनसाथी और राजा के रूप में देखा जाता है। सभी जीवित जिम्मेदारियों और जवाबदेह बेटों के लिए आदर्श के रूप में सेवा करने के अलावा। वाल्मीकी द्वारा संस्कृत में वर्णित रामायण एक चिरस्थायी महाकाव्य कथा है। प्राथमिक विषय वस्तु "मर्यादा पुराणोत्तम" राम है, जिन्हें उनके भाई लक्ष्मण और पत्नी सीता के साथ निष्कासित कर दिया गया था और 14 वर्षों तक जंगल में एक तपस्वी के रूप में रहने के लिए मजबूर किया गया था। कथा का विरोधी पक्ष रावण है, जो सीता का विस्तार करता है। फिर राम उसे बचाते हैं, और वे दोनों अयोध्या लौट आते हैं। अन्य सभी कार्यों की तरह, महाकाव्य प्रासंगिक है और सामाजिक बुराईयों से भरा हुआ है, जिसमें स्पष्टवादिता, जिम्मेदारी, धार्मिकता और अनगिनत अन्य आदर्श गुण शामिल हैं। यह देखते हुए कि रामायण हाल ही में रिकॉर्ड तोड़ रही है, यह महत्वपूर्ण है कि हम आज की आधुनिक दुनिया में इसकी प्रयोज्यता और प्रासंगिकता के बारे में सोचें।

महाकाव्य स्थिर लेखन नहीं हैं क्योंकि वे एक दीर्घकालिक मौखिक परंपरा के उत्पाद हैं। वे व्यापक संख्या में आख्यानो का हिस्सा हैं जो ऐतिहासिकता और सामुदायिक चेतना के विभिन्न अनुभवों से, व्यक्तिपरकता के विभिन्न सुविधाजनक बिंदुओं से उत्पन्न हो रहे हैं। भारत के महाकाव्य उत्तर-औपनिवेशिक संदर्भ में नए इतिहास तैयार करने और जाति, वर्ग, नस्ल, अपमान और भेदभाव की अन्य आधिपत्यवादी राजनीति से संबंधित सीमांतता के विषयों को बताने के लिए महत्वपूर्ण रूपक बन गए हैं। वंचितों और दबी हुई महिलाओं की आवाज़ के नारीवादी विनियोग ने भारत में महाकाव्यों के पुनर्कथन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। महाकाव्य केवल कविताएँ नहीं हैं; स्कॉटिश कवि, उपन्यासकार और साहित्यिक आलोचक एंड्रयू लॉंग के अनुसार, वे भी इतिहास हैं - वास्तविक

घटनाओं के नहीं, बल्कि वास्तविक शिष्टाचार और वास्तविक दुनिया के बारे में जो अन्यथा हमारे लिए अज्ञात है। भारतीय महाकाव्यों, रामायण और महाभारत ने अपने लक्ष्यों और इच्छाओं, व्यक्तित्वों, विजयों और असफलताओं और दृष्टिकोणों के विविध प्रतिनिधित्व के कारण भारतीय विरासत पर छाप छोड़ी है। इसके बाद, महाकाव्य सांस्कृतिक और सामाजिक-आर्थिक तत्वों को प्रतिबिंबित करते हैं जिनमें मानव सभ्यता शामिल है। दोनों महाकाव्य अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, जिनमें राष्ट्रीय धार्मिक लोकाचार और सांस्कृतिक परंपरा दोनों शामिल हैं। भारत की सोच को इन महाकाव्यों और उनके पात्रों ने सूचित किया है।

"संशोधन" उस प्रक्रिया का वर्णन करता है जिसके माध्यम से महाकाव्य की नारीवादी पुनर्कथन या व्याख्याएं महिला पात्रों को एजेंसी, दृश्यता और आवाज देने के लिए फिर से काम करती हैं। प्रासंगिक मतभेद कई रामायण पुनर्कथनों को निर्धारित करते हैं। रामायण के विभिन्न संस्करण साहित्यिक मानदंडों, कुछ सामाजिक संबंधों के विन्यास, धार्मिक समुदायों की मान्यताओं और भौगोलिक प्रकृति संस्कृतियों से प्रभावित हैं। रामायण के लेखकों का पुनर्लेखन उनके राजनीतिक और सामाजिक दृष्टिकोण के साथ-साथ समाज में उनकी स्थिति, साहित्यिक पसंद-नापसंद और धर्म के संबंध में दृढ़ विश्वास को प्रतिबिंबित करता है।

2. रिसर्च गैप RESEARCH GAP

सीता और द्रौपदी जैसे प्रमुख महिला पात्र अधिकांश नारीवादी संशोधनवादी पौराणिक कथाओं के विषयों में से हैं, जो उपन्यासों या फीचर-लंबाई नाटकों में पाए जा सकते हैं। छोटी महिला पात्रों पर ध्यान देकर और जाति, नस्ल और स्त्री सौंदर्यशास्त्र की अवधारणाओं के अंतर्विरोधों को संबोधित करते हुए, सारा जोसेफ और वोल्गा ने लघु कथाओं के संग्रह के माध्यम से रामायण की जांच की है।

साहित्य की समीक्षा (Literature Review): रामायण की महिला पात्रों और आधुनिक समाज में उनकी प्रासंगिकता पर साहित्य समीक्षा से पता चलता है:

पारंपरिक चित्रण

सीता: आदर्श स्त्रीत्व, निष्ठा, भक्ति (वाल्मीकि रामायण)

कौशल्या: माता स्वरूप का पालन-पोषण (वाल्मीकि रामायण) कैकेयी: खलनायक, चालाक महिला (वाल्मीकि रामायण) शूर्पणखा: राक्षसी, अति-कामुक महिला (वाल्मीकि रामायण) मंदोदरी: बुद्धिमान, वफादार पत्नी (वाल्मीकि रामायण)

शांता: हिंदू महाकाव्य रामायण में शांता अंग की राजकुमारी हैं। वह ऋष्यश्रृंग की पत्नी हैं। महाकाव्य और बाद के भारतीय साहित्य के उत्तरी संस्करणों में, उन्हें राजा दशरथ और रानी कौशल्या की बेटी के रूप में माना जाता है, जिन्हें बाद में राजा रोमपाद और रानी वर्शिनी ने गोद ले लिया था।

नारीवादी परिप्रेक्ष्य

सीता: निष्क्रियता, मौन, समर्पण के लिए आलोचना की गई (नारीवादी व्याख्याएं)

कौशल्या: सशक्त, स्वतंत्र महिला के रूप में पुनः स्थापित (नारीवादी पुनर्व्याख्या)

कैकेयी: महिला एजेंसी, शक्ति, प्रतिरोध के प्रतीक के रूप में पुनः प्राप्त (नारीवादी पुनर्कल्पना)

शूर्पणखा: स्वतंत्र, आत्मविश्वासी महिला के रूप में पुनः स्थापित (नारीवादी पुनर्कल्पना)

मंदोदरी: ज्ञान, निष्ठा, कूटनीति की प्रशंसा (नारीवादी पुनर्व्याख्या)

आधुनिक प्रासंगिकता

महिला अधिकार एवं सशक्तिकरण,

लिंग भूमिकाएँ और रूढ़ियाँ,

पारिवारिक गतिशीलता और रिश्ते,

महिला एजेंसी, शक्ति और प्रतिरोध,

साहित्य और मीडिया में प्रतिनिधित्व और विविधता,

समसामयिक अनुकूलन

रामायण का पुनर्कथन: सशक्त, स्वतंत्र महिला पात्र (उदाहरण के लिए, अशोक बैकर द्वारा लिखित रामायण)

नारीवादी पुनर्व्याख्याएँ: पारंपरिक चित्रणों को चुनौती दें, नए दृष्टिकोण प्रस्तुत करें (उदाहरण के लिए, चित्रा बनर्जी दिवाकरुनी द्वारा द पैलेस ऑफ़ इल्यूजन्स)

आधुनिक साहित्य, कला और मीडिया: रामायण की महिला पात्रों से प्रेरणा लें

समापन विचार- रामायण की महिला पात्र आधुनिक समाज में प्रासंगिक बनी हुई हैं, जो लैंगिक भूमिकाओं, रिश्तों और महिला सशक्तिकरण में अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं। नारीवादी दृष्टिकोण और समकालीन अनुकूलन इन पात्रों को पुनः प्राप्त करना और उनकी पुनर्कल्पना करना जारी रखते हैं, पारंपरिक चित्रणों को चुनौती देते हैं और नए दृष्टिकोण पेश करते हैं।

3. अनुसंधान क्रियाविधि RESEARCH METHODOLOGY

नारीवाद, संशोधनवादी पौराणिक कथाएँ, संवाद चेतना और अल्पसंख्यक विमर्श जाँच के लिए शुरुआती बिंदु के रूप में काम करते हैं। जिस तरह से ये दस लघु कथाएँ, सबसे पहले, रामायण को धर्मनिरपेक्ष समाज और धार्मिक संस्थानों दोनों में पितृसत्तात्मक आधिपत्य प्रथा के स्रोत के रूप में प्रदर्शित करती हैं, तोड़ती हैं, आलोचना करती हैं, और प्रदर्शित करती हैं, निम्नलिखित अध्याय उस पहलू की जांच करना चाहते हैं जिसमें ये कहानियाँ हैं वास्तव में इसे नारीवादी संशोधनवादी पौराणिक कथाओं के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है

रामायण में परंपरा(The tradition in the Ramayana)

रीटेलिंग द रामायण: वॉयस फ्रॉम केरल पुस्तक की प्रस्तावना में, अनुवादक वसंती शंकरनारायणन ने भारत में महाकाव्य के सांस्कृतिक महत्व और देश की मानसिकता पर इसके दीर्घकालिक प्रभाव पर चर्चा की है। भारत के दो महान महाकाव्यों में से एक रामायण की कहानियों से अधिकांश भारतीय परिचित हैं। यह एक ऐसी कहानी थी जो मेरी पीढ़ी के लोगों द्वारा बहुत कम उम्र में बच्चों को दी गई थी

हमारी नजर में यह प्रेम की एक खूबसूरत कहानी थी जिसका मुख्य पात्र रमन एक उत्कृष्ट आदर्श साबित हुआ

रमन की कहानी निर्विवाद रूप से "राम की कहानी" थी, जैसा कि हमने समझा था। वह युवक जिसने मुकुट की तलाश छोड़ दी और अपने पिता की दूसरी पत्नी कैकेयी से की गई प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए जंगल में चला गया, वह स्थायी नायक और महान धनुर्धर राम था। इसके अतिरिक्त उन्हें एक समर्पित भाई और एक ऐसे व्यक्ति के रूप में वर्णित किया गया जो एक महान प्रेमी के रूप में अपनी एकल पत्नी के साथ खड़ा रहा। कुल मिलाकर, वह एक आदर्श व्यक्ति था, जिसके जैसा हर बच्चा बनने की कोशिश करता था और हर लड़की बड़ी होकर उसके साथ रहने का सपना देखती थी। रामायण के अनेक पुनर्कथनों पर विशेष परिस्थितियों का प्रभाव पड़ता है। विशिष्ट साहित्यिक शैलियाँ, व्यक्तियों के बीच संबंधों के विशिष्ट विन्यास, आस्था के संबंध में दृढ़ विश्वास और स्थानीय रीति-रिवाज रामायण की विभिन्न समझ को प्रभावित करते हैं।

महाकाव्यों में महिलाओं का चरित्र चित्रण(The Epics' characterisation of women): महिलाओं की भूमिकाओं की महत्वपूर्ण प्रकृति और भारतीय परंपरा की स्थापना में महाकाव्यों द्वारा निभाए गए आवश्यक कार्यों को डॉ. प्रेमा कस्तूरी के लेख "रामायण में महिलाएं - चित्रण, समझ, व्याख्या और प्रासंगिकता" में रेखांकित किया गया है। इतिहासकार डॉ. प्रेमा कस्तूरी के अनुसार, "अयोध्या की रानी सीता के शाश्वत स्पर्श का आज तक भारतीय नारीत्व को आकार देने पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा है।" "शांत लेकिन शक्तिशाली कहानी ने तुरंत लोगों की भावनाओं को व्यक्त किया।" बहन निवेदिता। कुल मिलाकर, भारतीय महिलाएं अपने व्यक्तित्व के पांच पहलुओं को शामिल करती हैं: वे समझदार और "धरती से जुड़ी" हैं, फिर भी वे भावुक और "उग्र" भी हैं; शांत और "तरल" (अनुकूलनीय), एक स्वतंत्र और मायावी भावना का प्रदर्शन करते हैं, और अपने लिए "स्थान" चाहते हैं। उनके दो व्यक्तित्व हैं क्योंकि वे "पंचकन्या" विचार के वर्तमान स्वामी हैं। एक ओर, कड़े सामाजिक मानदंडों द्वारा उनकी सीमाएँ हैं; दूसरी ओर, वे पुरुष-प्रधान सामाजिक संरचना द्वारा उत्पन्न सामाजिक और प्रथागत कानूनों में अंतराल का लाभ उठाने के लिए स्वतंत्र हैं। वे अभी भी व्यक्त कर सकते हैं कि वे कौन थे और सामाजिक मानदंडों के प्रतिबंधों के भीतर वह जीवन बना सकते हैं जो वे चाहते थे।

संशोधनवादी नारीवादी पौराणिक कथा(Revisionist feminist mythology):

यह परियोजना नारीवादी संशोधनवादी पौराणिक कथाओं की एक उपशैली में फिट बैठती है। नारीवादी पुनरीक्षण को परिभाषित करने के लिए एंड्रिएन रिच द्वारा उपयोग किए गए निम्नलिखित शब्द हैं: हमारे लिए [महिलाओं], पुनरीक्षण सांस्कृतिक इतिहास में सिर्फ एक अध्याय के बजाय अस्तित्व का एक कार्य है। यह पीछे मुड़कर देखने, नई आँखों से देखने और हमारे परिचय की आलोचना करते हुए किसी पुराने काम का सामना करने का कार्य है। हम स्वयं को तब तक नहीं जान सकते जब तक हम उन पूर्वकल्पित धारणाओं को नहीं समझ लेते जिनमें हम रहते हैं। इसके अलावा, एक महिला की स्वयं के बारे में जागरूकता की आवश्यकता किसी चीज़ को पहचानने की आवश्यकता के बजाय, पुरुषों द्वारा शासित समाज की आत्म-विनाशकारी प्रकृति की अस्वीकृति से उत्पन्न होती है। भारतीय महिला लेखिकाएँ आमतौर पर इस नारीवादी अवधारणा को संबोधित करती हैं। इस आयाम के उदाहरण हैं सारा जोसेफ द्वारा लिखित रामायण कथकल (मलयालम), यशोधरा मिश्रा द्वारा पुराण कथा (उड़िया), वोल्गा द्वारा विमुक्त (तेलुगु), मुप्पला रंगनायकम्मा द्वारा रामायण विशा वृखम (तेलुगु), और दोप्ति और स्टैनडायनी (बांग्ला) महाश्वेता देवी द्वारा। रामायण की कई व्याख्याएँ समय की शुरुआत से ही बताई गई हैं, कुछ व्याख्याओं में विशेष पात्रों पर जोर दिया गया है, जबकि मुख्य चरित्र, राम के इर्द-गिर्द ध्यान केंद्रित किया गया है, और महाकाव्य को समग्र रूप से प्रदर्शित नहीं किया गया है। मुख्यधारा की कथा के विपरीत, ये पुनर्कथन कम प्रतिनिधित्व वाले पात्रों के दृष्टिकोण से कहानी को चित्रित करते हैं।

प्राथमिक ग्रंथ और लेखक(Primary Texts and the Authors): "रामायण से महिलाओं की आवाज़ों का पुनरीक्षण: वोल्गा की द लिबरेशन ऑफ सीता और सारा जोसेफ की रामायण कहानियों का एक नारीवादी विश्लेषण" शीर्षक से, शोध परियोजना निम्नलिखित दो प्राथमिक ग्रंथों का मूल्यांकन करती है: वोल्गा की द लिबरेशन ऑफ सीता (टी. विजय कुमार द्वारा तेलुगु से अनुवादित) सी. विजयश्री) और सारा जोसेफ की रामायण स्टोरीज़ फ्रॉम रीटेलिंग द रामायण: वॉयसेस फ्रॉम केरल, सारा जोसेफ द्वारा (मलयालम से

अनुवादित वसंती शंकरनारायणन द्वारा) और रामायण स्टोरीज फ्रॉम रीटेलिंग द रामायण: वॉयसेस फ्रॉम केरल, सारा जोसेफ द्वारा (मलयालम से अनुवादित वसंती शंकरनारायणन द्वारा) और केरल की कहानी से सारा जोसेफ की रामायण कहानियां। महाकाव्य कथा का अध्ययन राल्फ टी. एच. ग्रिफ़िथ के रामायण के अनुवाद का उपयोग करके किया गया है। सारा जोसेफ, जिनका जन्म 1946 में हुआ था, एक व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त मलयालम उपन्यासकार और उपन्यासों और लघु कथाओं की लेखिका हैं। केंद्र साहित्य अकादमी पुरस्कार और वायलार पुरस्कार उनके उपन्यास आल्हायुदे पेनमक्कल को प्रदान किया गया है, जिसका अर्थ है पिता परमेश्वर की बेटियाँ। केरल के नारीवादी आंदोलन में एक प्रमुख भागीदार, सारा जोसेफ ने एसोसिएशन मानुषी की स्थापना की, और इसका मतलब थिंकिंग वुमेन है। 2014 में, उन्हें आम आदमी पार्टी का आधिकारिक सदस्य घोषित किया गया और त्रिशूर से संसद के लिए दौड़ीं।

शैली का चयन(Choice of Genre)

इस शोध में एक प्रमुख विचार शैली का चयन है - "लघु कहानी।" लघु कहानी शैली के महत्व पर विलियम बॉयड ने अपने लेख "ए शॉर्ट हिस्ट्री ऑफ द शॉर्ट स्टोरी" में प्रकाश डाला है। बॉयड का कहना है कि एक लघु कहानी सुनाने के दौरान, "कुछ विशेष बनाया गया है, हमारे अनुभव का कुछ सार निर्मित किया गया है, कब्र और विस्मृति के संबंध में हमारी व्यापक अशांत यात्रा का कुछ अस्थायी अर्थ बनाया गया है।" रामायण में सीता का प्रतिनिधित्व वाल्मिकी ने किया था, जो संभवतः नारीवादी प्रवृत्ति के थे, सौंदर्य, हृदय की कोमलता, करुणा की प्रचुरता, निष्ठा, सबसे मासूम प्रकार की बुद्धि, हृदय का साहस और सहनशक्ति के सामंजस्यपूर्ण अवतार के रूप में। इन गुणों ने सीता को अपने अधिकारों के लिए सफलतापूर्वक लड़ने में मदद की, जिसे उन्होंने अपने नैतिक संहिता द्वारा परिभाषित किया। लेकिन हर्स्ट और लिन (2004) के अनुसार, भारतीय नारीवादियों ने लगातार सीता को "एक अत्यधिक विनम्र पत्नी के रूप में सजा सुनाई है, जिसने अंततः अविश्वासी पति के लिए आत्महत्या कर ली।" सीता को ऐतिहासिक रूप से हिंदुओं द्वारा आदर्श महिला माना जाता है, जो रामायण और उसके सबसे महत्वपूर्ण पात्रों की सराहना से प्रेरित है। हालाँकि, आज की नारीवादी इस विचार को दो कारणों से चुनौती देती हैं: पहला, वे सीता के व्यक्तित्व को महिलाओं के बीच हिंदू अधीनता के प्रतिनिधित्व के रूप में देखते हैं, और दूसरा, उनका मानना है कि सीता को एक आदर्श के रूप में संरक्षित करना पुरुष प्रभुत्व और महिला उपठेकेदारी कार्य को नजरअंदाज करना है। वास्तव में, कुछ नारीवादियों के अनुसार, भारत में घरेलू हिंसा "सीता सिंड्रोम" से उत्पन्न होती है। हालाँकि, पूरे महाकाव्य में सीता के कार्यों का निष्पक्ष विश्लेषण पाठक को यह मजबूत अहसास कराता है कि उसने कभी भी अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता और नैतिक मानकों से कोई समझौता नहीं किया।

महाकाव्य में कहीं भी पाठक ने सीता को पुरुष प्रभुत्व के लिए प्रतिबद्ध नहीं देखा है, अपने पति राम से या यहां तक कि लंकाई राक्षसों के हत्यारे शासक रावण से भी नहीं, जिसकी हिरासत में उसे एक साल तक बंदी बनाकर रखा गया था। इसके विपरीत, वह उसके अधिकार को चारों ओर से चुनौती देती है, जिससे उसे अपने अधिकारों के बारे में जागरूकता और उस बहादुरी का पता चलता है जिसके साथ उसने अपने अंतर्निहित मूल्यों को तीव्रता से बरकरार रखा है।

महाकाव्य/पौराणिक कथा/संशोधन(Epics/Mythology/Revisioning)

ए.के. रामानुजन का लेख "तीन सौ रामायण: पांच उदाहरण और अनुवाद पर तीन विचार" रामायण की विविधता पर प्रकाश डालता है, दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशिया में उनके प्रभाव और उनके कई कथा प्रारूपों की जांच करता है। विभिन्न धार्मिक प्रणालियों, संस्कृतियों और भाषाओं से जुड़ी सैकड़ों रामायण कहानियों का रामानुजन ने अध्ययन किया है। लेखक इस बात की जाँच करता है कि अंततः क्या रूपांतरित, परिवहन और स्थानान्तरित होता है। लघुकथा शैली में जो कमी रह गई है, जहां छोटी महिला पात्रों पर ध्यान केंद्रित करते हुए बहुत अधिक पुनर्कथन नहीं किया जाता है, उसे रामानुजन द्वारा उपन्यास और कविता सहित विभिन्न शैलियों में रामायण की जांच द्वारा ध्यान में लाया गया है।

शोध का महत्व(Significance of the research):

रामायण में महिला पात्रों का अध्ययन समकालीन समाज में कई कारणों से महत्वपूर्ण है।

1. लैंगिक भूमिकाओं और पूर्व धारणाओं की समझ हासिल करना: रामायण में महिला पात्रों की जांच करके, हम स्थापित लैंगिक मानदंडों और रूढ़ियों को चुनौती दे सकते हैं और उन पर पुनर्विचार कर सकते हैं।
2. सशक्तिकरण और एजेंसी: अध्ययन महिलाओं की स्वायत्तता, एजेंसी और सशक्तिकरण पर जोर देता है, समकालीन महिलाओं को अपने अधिकारों के लिए खड़े होने और पितृसत्तात्मक परंपराओं को चुनौती देने के लिए प्रोत्साहित करता है।
3. विविधता और प्रतिनिधित्व: रामायण में महिला पात्रों का विश्लेषण समावेशिता को बढ़ावा देता है और लैंगिक रूढ़िवादिता को खत्म करता है।
4. सांस्कृतिक विरासत और परंपरा: हमारे अतीत के साथ संबंध को बढ़ावा देकर, अध्ययन हमें अतीत के ज्ञान और मूल्यों को समझने और आत्मसात करने में मदद करता है।
5. आधुनिक प्रासंगिकता: रामायण की महिला पात्र भेदभाव, लिंग आधारित हिंसा और सामाजिक दबाव जैसी चुनौतियों से निपटती हैं, जो उनकी कहानियों को आज की दुनिया के लिए प्रासंगिक और प्रासंगिक बनाती हैं।

6. नारीवादी दृष्टिकोण: शोध नारीवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है जो आलोचनात्मक सोच और लिंग गतिशीलता और शक्ति प्रणालियों की परीक्षा को बढ़ावा देता है।
 7. प्रेरणा और रोल मॉडल: रामायण में महिला पात्र समकालीन महिलाओं के लिए प्रेरणा का काम करती हैं, उन्हें बहादुरी, ज्ञान और धैर्य जैसे गुणों का उदाहरण देने के लिए प्रोत्साहित करती हैं।
 8. सामाजिक टिप्पणी: अध्ययन सामाजिक टिप्पणी प्रदान करता है जो सामाजिक न्याय, महिलाओं के अधिकार और लैंगिक समानता जैसे वर्तमान विषयों पर विचार करता है।
 9. अंतःविषय विधियाँ: रामायण में महिला पात्रों की जांच बहु-विषयक विधियों के उपयोग को बढ़ावा देती है जो सांस्कृतिक अध्ययन, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान और साहित्य को एकीकृत करती हैं।
 10. कालजयी अपील: रामायण में महिला पात्रों का अध्ययन स्थायी है और सभी उम्र और समाजों पर लागू होता है।
- हम रामायण में महिला पात्रों की जांच करके लिंग गतिशीलता, सशक्तिकरण और प्रतिनिधित्व के बारे में अधिक जान सकते हैं। इससे अंततः समकालीन समाज के बारे में हमारी समझ में सुधार होगा।

4. निष्कर्ष CONCLUSION

रामायण की महिलाएं, चाहे प्यार, इच्छा या किसी उच्च उद्देश्य से प्रेरित हों, अपनी पसंद व्यक्त करने में शायद ही कभी झिझकती हैं और शायद ही कभी अपने पुरुष समकक्षों द्वारा सीमित होती हैं। यह जानने के बावजूद कि सीता की स्वर्ण प्रिय की इच्छा एक जाल थी, राम ने उनकी "मूर्खतापूर्ण" मांग स्वीकार कर ली। उन तीन पुरुषों में से जो अपनी इच्छा के विरुद्ध महिलाओं का लालच करने का प्रयास करते हैं, इंद्र को शाप दिया जाता है, और रावण और बाली की मृत्यु हो जाती है। भले ही रामायण में महिलाओं के साथ किसी भी तरह के दुर्व्यवहार के लिए सख्त दंड का प्रावधान है, लेकिन रानी कैकेयी से लेकर तपस्वी तक किसी भी महिला पात्र पर इस तरह से मुकदमा नहीं चलाया जाता है। अनसूया में आत्मरक्षा कौशल की कमी और पुरुष सुरक्षा की इच्छा प्रदर्शित होती है। वाल्मीकी की रामायण में, सीता को "अपने सतीत्व की अग्नि से रावण को भस्म करने" में सक्षम माना गया है। महाकाव्य की राजनीतिक और शाही पृष्ठभूमि के अलावा, इसके जंगलों और आश्रमों के आध्यात्मिक परिदृश्य में अनसूया, शबरी और स्वयंप्रभा जैसी मजबूत इरादों वाली, तपस्वी महिलाएं भी शामिल हैं। बाद वाले दो एकल, आत्मनिर्भर और अपनी जीवनशैली से संतुष्ट रहना चुनते हैं। जब भारतीय उपमहाद्वीप या अन्य संस्कृतियों के अन्य महाकाव्य-साहित्यिक कार्यों में उनके समकक्षों से तुलना की जाती है, तो रामायण की महिलाएं, महिला आवश्यकताओं, भूमिकाओं, आकांक्षाओं और पहचान की पूरी श्रृंखला को शामिल करने के बावजूद, शायद ही कभी आंका जाता है कि क्या उनकी इच्छाएं अन्यायपूर्ण नहीं हैं या किसी अन्य व्यक्ति के मौलिक अधिकारों के विपरीत हैं। मुख्य रूप से, उनके पास शारीरिक टकराव और तपस्या जैसे विषयों में विशेषज्ञता थी, जिन्हें अंततः पुरुषों के लिए अद्वितीय माना गया। नारीवादी आंदोलन की आधारशिला, अधिकारों और अवसर की समानता, महाकाव्य की प्रत्येक महिला पात्रों के लिए व्यायाम और आनंद लेने के लिए प्राप्य थी। यह "समानता और अवसर का अधिकार", जो महाकाव्य में पुरुषों और महिलाओं को डिफ़ॉल्ट रूप से प्रदान किया गया था, संभवतः सबसे महत्वपूर्ण चर है जो उनके "आयु" को सत्य या सत्य युग बनाने में योगदान देता है।

5. संदर्भ REFERENCES

- [1] रिच, एड्रिएन। "व्हेन वी डेड अवेकन: राइटिंग ऐज़ री-विज़न।" अंग्रेजी के शिक्षकों की राष्ट्रीय परिषद वॉल्यूम। 34, नहीं। 1, अक्टूबर 1972, पृ. 18-30, [jstor.org/stable/375215](https://www.jstor.org/stable/375215)
- [2] रामानुजन, ए.के. "सौ रामायण हैं: पांच उदाहरण और अनुवाद पर तीन विचार।" मेनी रामायण: द डायवर्सिटी ऑफ ए नैरेटिव ट्रेडिशन इन साउथ एशिया, पाउला रिचमैन द्वारा संपादित, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय प्रेस, 1991।
- [3] देवदत्त ब्लॉक्स: "सीता: एन इलस्ट्रेटेड रीटेलिंग ऑफ़ द रामायण" (2017, 25 मई)। यू ट्यूब. <https://www.youtube.com/watch?v=Wu6iCOJGONY>
- [4] तिवारी, आस्था. "नारीवादी नजरिए से रामायण और उसकी प्रासंगिकता पर दोबारा गौर करना।"
- [5] कस्तूरी, प्रेमा. "रामायण में महिलाएं।"
- [6] पेली, नीना, और मालाश्री लाल।
- [7] "सीता ब्लूज़ गाती हैं।" इन सर्व ऑफ सीता: रीविजिटिंग माइथोलॉजी, मालाश्री लाल और नमिता गोखले द्वारा संपादित, पेंगुइन बुक्स, 2009, पीपी. 124-127
- [8] पटनायक, देवदत्त. मिथक = मिथ्या: हिंदू पौराणिक कथाओं को डिकोड करना। पेंगुइन पुस्तकें। 2006. पटनायक, देवदत्त।
- [9] "सीता गौरी या काली के रूप में।" इन सर्व ऑफ सीता: रीविजिटिंग माइथोलॉजी, मालाश्री लाल और नमिता गोखले द्वारा संपादित, पेंगुइन बुक्स, 2009, पृष्ठ 18-20.
- [10] www.google.com
- [11] Wikipedia.org